ISSN No 2347-7075
Impact Factor- 7.328
Volume-2 Issue-19

NTERNATIONAL OURNAL of DVANCE and PPLIED ESEARCH

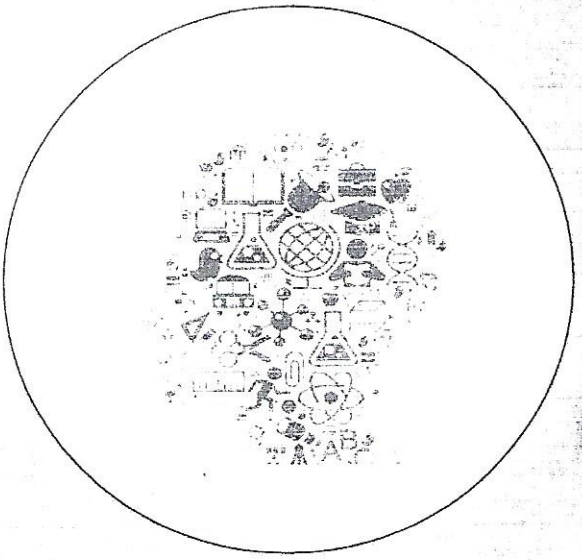

Publisher: P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association
Kolhapur(M.S), India

Young Researcher Association

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-19 July-Aug-2022

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

July-Aug-2022 Volume-2 Issue-19

On

Chief Editor
P. R. Talekar
Secretary,
Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

Editor
Dr. Umakant Chanshetti
Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College (Maharashtra) India

Co- Editor
Dr. Maruti Musande
Dr. Rajshekhar Varshetti
Dr. Sunil Rajput
Dr. Ningappa Somgonde

Published by- P R Talekar, Secretary, Young Researcher Association, Kolhapur (M.S), India

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.2 Issue-19 July-Aug-2022

CONTENTS

Sr No	Paper Title	Page No.
1	डिजिटल पर्यटन प्रा. डॉ. शितोळे अनिल विजय, गायकवाड प्रतिभा शिवाजी	1 to 4
2	शाश्वत विकासात जलसंपदाचे महत्त्व प्रा. मनोहर नारायण मोरे	5 to 7
3	भारतातील आदिवासी जमातींचा वर्गीकृत अभ्यास डॉ. शरद बाबुराव सोनवणे	8 to 13
4	भारतीय लोकसंख्येची वयोरचना डॉ. हरी साधू वाघमारे	14 to 17
5	समुदायाचे आरोग्य (Health in Community) प्रा.दत्तात्रय प्रभुराव मुंडे	18 to 22
6	आजच्या काळात भारतीय महीलांचा आहार व आरोग्य – एक अभ्यास प्रा.कविता आर.किर्दक	23 to 25
7	भारतातील शाश्वत विकास ध्येय : बहुआयामी दारिद्र्य निर्देशांक वस्तुस्थिती डॉ.बिरादार माधवराव नरसिंगराव, चव्हाण उदयराज चंदन	26 to 29
8	कालाराम मन्दिर प्रवेश: एक सामाजिक-आर्थिक उन्नति का मार्ग डॉ बृजेन्द्र सिंह बौद्ध	30 to 34
9	सामाजिक शास्त्रातील अर्थशास्त्राचे योगदान डॉ. सुरेखा भागुजी भिंगारदिवे	35 to 37
10	महाराष्ट्रातील महिला धोरणाची वास्तविकता प्रा. सि. के .भोवते	38 to 41
11	महात्मा बसवेश्वरांचे मानव समाजासाठी केलेले योगदान प्रा. डॉ. सोमगोंडे निंगप्पा सिद्राम	42 to 44
12	मनुष्य जन्म से नही, कर्म से श्रेष्ठ है : संत रैदास प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार	45 to 47
13	परभणी जिल्हयातील पर्यटन स्थळे प्रा.डॉ. देशमुख एस .बी.	48 to 51
14	जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग का मानव सभ्यता पर प्रभाव श्रीमती सरला देवी चक्रवर्ती	52 to 62
15	स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विद्यापीठ संलग्नित महाविदयालयीन ग्रंथालयातील सेवा सुविधा व माहिती तंत्रज्ञान आधारित साधनांची उपलब्धता : एक अभ्यास अंबादास वसंत खिलारे, डॉ. दिलीप डी. मेस्त्री	63 to 66
16	संस्कृत : एक वैज्ञानिक भाषा डॉ. सत्येंद्र राऊत	67 to 69
17	अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान (Economics as Social Science) प्रा. गणेश गंभीरराव देशमुख	70 to 72
18	भारतातील महिला रोजगार व लिंग असमानता प्रा.सुदेवाड एस.व्ही.	73 to 76
19	हैद्राबाद मुक्तिसंग्राम आणि आर्यसमाज चळवळ प्रा.डॉ.सुनिल रजपूत	77 to 80

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.2 No.19 July – Aug 2022

मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से श्रेष्ठ है : संत रैदास

प्रा.डॉ.एम.बी.बिराजदार
जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,अणदूर ता.तुळजापूर,जि.उस्मानाबाद
Corresponding Author- प्रा.डॉ.एम.बी.बिराजदार
Email- mallinath birajdar1008@gmail.com

राष्ट्रसंत तरुण सागरजी के शब्दो में-
" संत अध्यात्म के आकाश में
इन्सानियत का इंद्रधनुष्य है
संत सौहार्द के सितार पर
सद्भाव का संगीत है
संत अपनत्व की ऑगन में
आत्मीयता की आराधना है"

भारत भूमि रत्नप्रसुता है। मॉ भारती ने अनेक नर-नारी रत्नों को जन्म दिया है। यह वंदन की भूमि है, अभिनंदन की भूमि है, क्योंकि अनेक संतो ने यहॉ जन्म लिया है। संत रैदास नक्षत्रों में से एक है। सामाजिक क्रांति के प्रणेता है। संत रैदास का जन्म उस समय हुआ जब शुद्रोंपर अन्याय अत्याचार हो रहा था। सामाजिक स्तर पर रुढि, परंपरा, जाति-प्रथा वर्णभिद आदि का बोल-बाला था। सामान्य जनता के जीवन में अंध:कार फैला हुआ था। इस अंध:कार को चिरकर मानवता की रक्षा के लिए १५ फरवरी १९३८ में माघ पौर्णिमा रविवार के दिन काशी के पास गोवर्धनपुर में रैदास का जन्म हुआ । मांडूर, मांडुगड आदि अन्य नाम भी बताया जाता है। रैदास के पिता का नाम रघुराम था रघुनंदन जाति के चमार थे और माता का नाम रघुराणी था। 'लोनाबाई ' रैदास की पत्नी थी । रैदास धुम्मकड प्रवृत्ति के थे, पुरे देश में उन्होंने भ्रमण किया । देश के कोने-कोने में दूर दराजतक उनका प्रचार प्रसार हुआ। १२ वर्ष की अवस्था से ही वे साधू -संगति मे रहने लगे थे, अनुभव प्राप्त कर समाज में प्रचलित अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ डटकर खडे रहे । उन्होने अस्सीम निष्ठा, अविरत परिश्रम और सदाचार के बल पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। जॉति-पॉति में विभाजित समाज को उन्होंने एकता के सूत्र में बांधकर स्वतंत्रता , समता बंधुता और न्याय प्रस्थापित किया । उनकी अमृतवाणी सूनकर प्रभावित होकर अनेक लोग उनसे दीक्षा प्राप्त की जिनमें मीराबाई , पीपाजी महाराज, दिल्ली का सुलतान सिकंदर शाह लोंधी आदि प्रमुख है।

संत रैदास के १८ साखी और १०१ पद ही उपलब्ध है। 'गुरु ग्रंथ साहब ' तथा अन्य कई संग्रहो में इनकें पद बिखरे हुए मिलते है। उपलब्ध ग्रंथो में रैदास की बानी, रैदास की साखी, रैदास पद तथा प्रल्हाद लीला आदि प्रमुख है।

रैदास के पिता चर्मकार होने के बावजूद भी अपने आपको धन्य समझते थे क्योंकि लोगो की सेवा करने का सुअवसर उन्हे मिलता था, लोगों के पैरो में कॉटे, पत्थर न चुभे ऐसी उनकी भावना थी । माता-पिता के कर्मरुपी भावना का परिणाम रैदास पर हुआ । माता-पिता धार्मिक थे, अपने व्यवसाय के साथ-साथ भगवत भक्ति में लीन हो जाते थे। प्रवचन, कीर्तन, उपनिषद , गीता का श्रवण आदि का प्रभाव रैदास पर पडा। उन्होने ज्ञान अर्जित किया । अंतिम समय में माता-पिता की अंतर्मन से सेवा की। भक्त पुंडलिक रैदास के संपर्क में आने के बाद उनका शिष्यत्व ग्रहण किया।

पृथ्वी, जल, तेज, वायू, आकाश आदि पंचतत्तव से शरीर बना है इसलिए सभी समान है। कोई उच्च-नीच नही, जाति मानव निर्मित है। 'मानवता ही सही जाति है। जॉति-पॉति मानना धर्म द्रोह है। जन्म से कोई श्रेष्ठ-कनिष्ठ नही होता, मनुष्य का कर्म श्रेष्ठ है। विश्व ईश्वर निर्मित है। ईश्वर भक्ति से मानव भवसागर पार कर सकता है। अपना शरीर ही एक पवित्र मंदिर है और आत्मारुपी परमेश्वर का निवास उसमे है । नाम भक्ति परमेश्वर तक ले जानेवाला सोपान है। कहकर दार्शनिक विचार समाज के सामने रखा और सामजिक एकता का बीज बोया। सामाजिक विषमता के खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया। और कहा राम-रहीम मंदिर-मस्जिद एक ही है । राम मंदिर में, नही और अल्ला मस्जिद में नही तो वह चराचर सृष्टी में है। रैदास के शब्दो मे-'

'जन्म जात मत पूछिए , का जात अरु पात।
'रविदास पूत सभ प्रभू के, कोवू नहिं जात-कुजात ।।[२]

रैदास कहते है जन्म, जाति मत पुछिए सब प्रभू के प्यारे है। प्रत्येक जीव हड्डी, मांस, चमडे से बना है, सब समान है तो उच्च-नीच कैसे इसलिए वे कहते है,

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

"चाम के हम भी, चाम के तुम भी
चाम के है, जग सारा ।
चाम बिगर कौन है जीव, कह 'रविदास चमारा' ।।[3]

रैदास कहते है जिधर देखो उधर चमडा ही चमडा है पुरी दुनिया चमडे से बना है। मानव शरीर, गाय , गाय का बछडा सब चमडा ही है। चमडे से ही ढोल बना है, और उस से संगीत का निर्माण हो रहा है। उंट, हाथी, राजा आदि चमडे से ही बने है । चमडे के शिवा कुछ है ही नही। वे कहते है -

"ज्याहां देखो वाहा चाम ही चाम। चाम कें मंदिर बोलत राम ।।'
चाम की गऊ, चाम का बचडा। चाम ही धुने, चाम ही ठाडा।।
चाम का हाती चाम का राजा। चाम के उँट' पर चाम का बाजा।।
कहत रोहिदास सुनो कबीर भाई । चाम बिना देह, किनकी बनाई ।।[4]

रैदास जीवन में कर्म को महत्वपूर्ण स्थान देते है। मनुष्य जन्म से नही कर्म से महान होता है। उनका स्पष्ट कहना है कि कोई नीच जाति का आदमी अगर अछा कर्म करता है तो वह उच्च है, महान है, लेकिन उच्च जाति का आदमी नीच कर्म करता है तो वह 'महानीच' है ऐसा कहकर तीखा व्यंग्य सा है, कडे शब्दो में निंदा की है। वे कहते है -

'रविदस' सुकरमन करन सौ, नीच ऊच हो जाय।
कइ कुकरम जौ ऊँच भी, तौ महा नीच कहलाय।।[5]

रैदास कहते है यह शरीर, माया, धन, दौलत, मंदिर, पुजारी, पंडे सब थोथा है' पंडे पुजारी सब स्वार्थ में लगे है। भोग विलास में रत होकर सब भाग रहे है । मन की शांति उन में नही है । पंडित उसकी वाणी, पोथी, शास्त्र पुराण सब थोथा है। इसलिए उन्होंने भक्तो को सलाह दिया है कि, इन लोगों के पीछे न लगकर निर्गुण, निराकार ईश्वर को अंतर्मन से पुकारो । वे कहते है -

"थोथी काया थोथी माया, थोथा हरि बिन जनम गवाया।
थोथा पंडित थोथी बानी, थोथी हरि बिन सबै कहानी ।।"[6]

रैदास कहते है कि, जीवन व्यर्थ गवाने से अच्छा है स्वयंप्रकाशित बनकर तथागत गौतमबुध्द के मार्गपर चलना चाहिए। प्रदीप गायकवाड के शब्दों में - 'जिसप्रकार समाज मुक्ति के लिए तथागत गौतमबुध्द ने 'अत्त दीप भव' अर्थात स्वयंप्रकाष्ति बनो का मंत्र दिया, मंत्र को अपनाकर जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया सक्षम बन गये, उनका कल्याण हुआ, उनकी पराधिनता नष्ट हो गयी, दु:ख गायब हुआ । रैदास ने भी वही मंत्र दिया स्वयंप्रकाष्ति बनो।[7] रैदास "बहुजन सुखाय-बहुजन हिताय " की अपेक्षा रखते है। उन्हे आशा है ऐसी व्यवस्था और ऐसे राज्य की जहाँ गरीब से गरीब को खाने के लिए अन्न मिले, छोटे बडे एक जगह बैठे उन में भाई-चारा निर्माण हो तभी मुझे प्रसन्नता मिलेगी । ऐसा वे कहते है, उनके शब्दों मे-

"ऐसा चाहो राज मै, जहाँ मिलै सब को अन्न ।
छोट बडो सभ सम बसै 'रविदास ' रहै प्रसन्न ।।[8]

विषमता को देखकर कवि दु:खी होता है। आज भी बहुजन समाज को पेटभर अन्न नही मिलात यह कितना बडा दुर्भाग्य है। प्रदीप गायकवाड के शब्दों में - "प्रत्येक क्षेत्र में आज विषमता है, रैदास को यह विषमता अपेक्षित नही थी वे समाज में परिवर्तन लाना चाहते थे क्रांति लाना चाहते थे, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व और न्याय की समाजिक क्रांति उन्हे अपेक्षित थी ।[9] रैदास के समाजिक क्रांति का केंद्रबिंदू मनुष्य है। मनुष्य तभी सुख प्राप्त कर सकता है जब वह अपने इंद्रियो को अपने वश में रखता है' उनके अनुसार इंद्रियों को वश में रखना ही 'शून्यावस्था' प्राप्त करना है ' उनके अनुसार -

"जो बस राखे इंद्रियां, सुख-दु:ख समझा समान ।
सोड अमरित पद पाइगो, कहि 'रविदास ' बखान ।।"[10]

रैदास के अनुसार विकारों पर विजय प्राप्त करना ही भगवान बनना है। इन्सान भगवान बन सकता है, यह उसके हाथ में ही है वे कहते है-

"सत्त संतोष अरु सदाचार, जीवन को आधार ।
'रविदास ' भये नर देवते, जिन तिआगे पंच विकार ।"[11]

प्रा.डॉ. एम.बी.बिराजदार

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

रैदास जीवन में सदाचार को महत्व देते है उनके अनुसार सदाचार जीवन का आधार है। सत्य के आचरण से नर-नारायण बन सकता है । यह उन्हे मोह, मत्सर आदि विकारों को त्यागनेवाला मनुष्य ही जीवन में सुख आनंद ला सकता है। ओशो रजनीश ने रैदास को 'ध्रुवतारा' की उपाधि दी है। उनके अनुसार "भारतीय गगनमंडल संतरुपी तारें से भरा हुआ है। उन सब की ज्योति एक ही है। संत रैदास उन तारो में 'ध्रुवतारा ' है। क्योंकि शुद्र के घर जन्म लेने के बावजूद भी काशी के कर्मठ पंडितो को उन्हें स्वीकार करने के लिए बाध्य किया । रैदास में ऐसा कुछ है कि, उन्हें रैदास को स्वीकारनाही पडा। "[१२] स्पष्ट है कि निम्न जाति को समाज में स्थान नही था, लेकिन रैदास का कर्म महान था। जाति से चर्मकार होने के बावजूद भी उन्होंने अपने कर्म के बलपर, आचरण कें बलपर तत्कालीन समाज में अपना स्थान सिध्द कर यह साबित किया कि मनुष्य जन्म से नही बल्की कर्म से श्रेष्ठ है। यह उनका महान कार्य ही है एक सामाजिक क्रांति है।

ज्ञानी झैलसिंह के शब्दों में –

"संत गुरु रैदास हमार देश के उच्चतम धार्मिक नेताओं में गिने जाते है। भक्तिकाल की परंपरा में संत रैदास का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं । वे एक उच्च कोटि के त्रिकाल द्रष्ट। और विचारक थे । उनके मानवतावाद, मानवसमता और सामजिक चेतना के विचार भारतीय संतो, विद्वानों और जन-मानस के लिए सदा प्रेरणा देते रहेंगे ।"[१३]

संदर्भ :-

१) राष्ट्रसंत तरुण सागर - कडवे प्रवचन से
२) रविदास दर्शन - दोहा ४९
३) रायदास पी.के. - सतगुरु रविदास महिमा, स्वतंत्र भारतीय प्रेस, भागलपुरा, जबलपुर (म.प्र.) १९९४ पृ.३०
४) संत रोहिदास - पृ.९१
५) रविदास दर्शन - दोहा १३०
६) रविदास दर्शन - दोहा १३०
७) गायकवाड प्रदीप- 'संत शिरोमणी गुरु रविदास' समता प्रकाशन , नागपूर पृ.३७
८) रविदास दर्शन - दोहा १९४
९) गायकवाड प्रदीप - संत शिरोमणी गुरु रविदास' समता प्रकाशन , नागपूर पृ.३८
१०) रविदास दर्शन दोहा- १६०
११) रविदास दर्शन दोहा - १७९
१२) ओशो - 'ऐसी भक्ति करे रैदासा' , संजीव प्रिंटर्स , महिला कॉलनी, गांधीनगर दिल्ली, प्र. संस्करण १९९०
१३) गायकवाड प्रदीप- 'संत शिरामणी गुरु रविदास' समता प्रकाशन , नागपूर पृ..२२

विश्वास है । संतोष, सदाचार के बिना जीवन व्यर्थ है। काम, क्रोध , मद

प्रा.डॉ. एम.बी.बिराजदार

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad